पुराप्रवाह

क्रमांक 1 2016

भारतीय पुरातत्व परिषद्, नई दिल्ली

वारूणेय क्षेत्र में कुषाण अधिवास की प्रक्रिया

सुरेन्द्र कुमार यादव*

मानव अधिवास की प्रक्रिया, मानव द्वारा स्थायी रूप से बसाई गई बस्तियों से प्रारंभ हो जाती है, जो कालांतर में भौतिक प्रगति के साथ निरंतर विकसित होती रही। यह प्रक्रिया मानव के परिश्रम, स्थायित्व, भौतिक प्रगति एवं उसके संगठन की प्रतीक होती है। इस प्रक्रिया में क्षेत्र विशेष की भौगोलिक संरचना, तकनीकी विकास एवं व्यापार–वाणिज्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी भी क्षेत्र के अधिवास का प्रारूप वहाँ निवास करने वाले मानव की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विशेषताओं को सफलतापूर्वक निरूपित करता है। गंगा–यमुना के मैदानी भागों में नदियों के संजाल में अनेक सभ्यता एवं संस्कृतियों ने जन्म लिया। इनमें वरुणा नदी क्षेत्र की संस्कृति भी महत्वपूर्ण सभ्यता का केंद्र रही है। इस क्षेत्र में आद्यैतिहासिक काल से ही मानव अधिवास के प्रमाण मिलते हैं, जिनका स्वरूप विभिन्न काल खंडों में भिन्न–भिन्न रहा, जिसमें एक क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होता है।

आदि गंगा के नाम से उल्लिखित वरणा अथवा वरुणा नदी, गंगा की सहायक प्राचीनतम नदियों में गिनी जाती है। इस नदी का उल्लेख वेद (अथर्ववेद 4/7/1।), उपनिषद् (व्यास 1987: 307), महाकाव्य (महाभारत, भीष्म पर्व, 6/10/3), पाणिनि के अष्टाध्यायी (*वरणानामदूर भवं नगरं वरणा। – वरणादिभ्यश्च सूत्र 4/2/82;* अग्रवाल, व 1969: 54), बौद्ध (*बुद्ध चरित 15/18–20; शास्त्री 1963*) एवं जैन ग्रंथों (*अग्निपुराण 11/6*), विभिन्न पुराणों (बील, 1958: 291), ह्वेनसांग के यात्रा विवरण (*जर्नल ऑफ रायल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयलैण्ड,* लंदन, 1896: 787–788) तथा अभिलेखों (*स्कंद पुराण, रेवा खंड, 5.3)* आदि में मिलता है। वरुणा का उद्गम इलाहाबाद जिले के फूलपुर तहसील के निकट मैलहनताल है। यहाँ से निकल कर यह नदी वाराणसी में राजघाट के समीप गंगा में मिल जाती है। स्कंदपुराण (अग्रवाल 1995: 144) में सामान्यतया नदी के दोनों ओर एक 'गव्यूति' (दो कोस) का क्षेत्र 'नदीक्षेत्र' कहा गया है। यहाँ वारुणेय क्षेत्र के अंतर्गत वाराणसी, जौनपुर, संत रविदास नगर (भदोही) एवं इलाहाबाद का कुछ भू–भाग सम्मिलित है।

वारुणेय क्षेत्र में कुषाण अधिवास की प्रक्रिया एवं पुरास्थलों का सर्वेक्षण सन् 2000–2006 एवं 2010–2012 के मध्य किया गया। सर्वेक्षण से प्रकाश में आए पुरास्थलों एवं उनसे प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर कुषाण कालखंड में मानव अधिवास के विविध आयामों यथा बसाव, विकास, उसका

* सहायक प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म0प्र0